प्रेम होने दीजिए

- डॉ० पी० के० मजुमदार
वैज्ञानिक "ई1"

करीब चार वर्ष पहले मेरे पास दो छात्र उनके Project Work के लिये आये थे । जब मैने उनमें से एक को चुना तो दूसरे छात्र ने प्रश्न किया "क्या मैं आपको पसन्द नहीं हूँ" । उत्तर में मैंने कहा "तुम प्यारे तो हो लेकिन प्यार के काबिल नहीं "। हालाकि वो छात्र इतना काबिल निकला कि बगैर किसी औपचारिक चुकित के ही मुझसे सभी तरह की सहायता प्राप्त किया । खासकर उसके कार्य के बारे में कटाक्ष को नजर अंदाज कर उसने मुझ पर भरोसा किया । जब मैं उसके प्रोजेक्ट (Project) के प्रशिक्षक के रूप में शामिल हुआ तो उसकी आशायें मेरी ओर कुछ ज्यादा ही प्रबल थी । कार्य के प्रति मेरी प्रतिबद्धता को समझने के अभाव में उसे जो अंक दिये गये उससे वो काफी नाराज था । इजहार किया मेरी माँ सें । क्योंकि उसे मेरी माँ से काफी लगाव था । मेरी माँ ने मुझसे जिक्र किया तो मैं कुछ बोल न सका । थोडा खराब तो लगा लेकिन क्या करता थोड़ा हँसा । फिर वो कहीं नौकरी में लग गया । वहां जाकर उसने मुझसे कोई संबंध नहीं रखा । मैं भी करीब करीब उसे भूल सा गया था कि अचानक एक दिन उसने फोन किया मेरी माँ को । उसे अपनी नौकरी में उन्नति के लिए मेरी सहायता चाहिए थी । माँ के आग्रह पर मैने उसे सहायता प्रदान की । बदले में एक दिन उसने मेरी माँ को फिर फोन किया औरअपने किये की माफी मांगने लगा और अपनी कृतज्ञता जाहिर की । मेरी माँ ने मुझसे कहा कि उस लड़के को मुझसे अब बहुत प्यार है । मैने हंसकर जवाब दिया वो अभी से नहीं उस दिन से मुझसे प्यार करता है जिस दिन पहली बार मेरे पास आया था बस मुझे उसके प्यार के काबिल बनने में थोड़ा सा वक्त लग गया । उस दिन मुझे इस बात का तथ्य पता नहीं था आज अनायास महसूस करता हूँ " कितने सच थे ये बोल औरउतनी ही अधुरी थी मेरी समझ इन शब्दों के उच्चारण करते समय । मुझे जगजीत सिंह के गजल की दो पंक्तियां याद आ रही है " ।

प्यार का पहला खत लिखने में वक्त तो लगता है ।
लम्बी दूरी तय करने में वक्त तो लगता है ।।

एक बार यह दूरी तय कर ली फिर मुस्कुराहट के सिवाय कुछ भी बिखेर नहीं पायेंगे । कभी मन ही मन और तो कभी चेहरे की अभिव्यक्ति से । कोई हमारे प्यार के काबिल बने, उसके पहले क्यों नही हम किसी के प्यार के काबिल बने । हाँ सिर्फ अनुशासन के दायरे में रहकर ।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की- 247667

बहुत समय पहले की बात है मेरा एक मित्र मुझसे कहने लगा यार ! मुझे मेरी बीवी से बहुत प्यार है लेकिन उसके माँ-बाप से नही । ऐसे में कोई दूसरा मित्र कहने लगा कि उसे उसके बच्चे से तो लगाव है लेकिन पत्नी से नहीं । मैं उन दिनों विवाहित नहीं था, इसलिए अनुभव लेने के लिहाज से पूछ बैठा कि उन्हें ऐसा अन्तर कैसे महसूस होता है कैसे वो समझ पाते है कि उन्हें फला से प्यार है, फलां से नहीं । मित्र ने समझाया कि जिन संबंधों में सुख-शान्ति मिले वहीं दिल को अच्छा लगे और उसी से प्रेम हो जाता है । उन दिनों सोच का दायरा थोड़ा सीमित था । इसलिए मान लेने के सिवाय कोई चारा नहीं था । लेकिन, आज लगता है जवाब में अवश्य कोई कमी थी । याद कीजिए अकबर-बीरबल के लोकप्रिय किस्से । जब अकबर बीरबल से पूछता है कि बीरबल बताओं, 'जीवन में सबसे बड़ा सुख क्या है ?' बीरबल जवाब देता है, 'शौच जाना' । जिसे वो अकबर को महसूस भी करा देता है । इतने सुख के बावजूद क्या किसी को प्यार है शौच से ? शायद ही कोई हो । क्योंकि 'सुख-शान्ति' और 'प्यार' दो अलग-अलग बातें हैं । हर सुख-शान्ति में प्यार छुपा हो, जरूरी तो नहीं। और वैसे ही हर प्यार हमें सुख और शान्ति प्रदान करेगी, यह सोच भी तो जायज नहीं । दरअसल, सुख और शान्ति अपनी लुप्त आकांक्षाओं की परिपूर्ण होने की दिमागी अभिव्यक्ति है और प्रेम एक अध्यात्मिक देन । एक दर्द, जिसका मलहम सिर्फ 'त्याग' और सिर्फ़ 'त्याग' । जो भी प्रेम को सुख और शान्ति के साथ जोड़ेगा, उसके लिए जीवन एक मृग-मरीचिका बनकर रह जाएगी ।

प्रेम को समझने के लिये आध्यात्मिकता की समझ जरूरी है । संसार में कोई भी वस्तु आध्यात्मिकता के बगैर जीवित नहीं रह सकती । जिस किसी चीज में जान है उसमें अध्यात्मिकता है सिर्फ जरूरत है तराशने की । जितना तराशों, उतना निखकर कर सामने आ जाएगी । मेरा यह मानना है कि एक ही समय में दो व्यक्तियों में तराशा हुआ स्तर अलग-अलग होता है, इसीलिए अध्यात्मिक भावों के उजागर होने के स्तर में भी भिन्नता होनी स्वाभाविक है । इसका मतलब यह कतई नहीं है कि उन दोनों में आध्यत्मिक भावों की मात्रा में कोई कमी हो । आध्यात्मिकता ईश्वर प्रदत्त है औरमालिक कभी भी किसी को किसी से कम या ज्यादा नहीं देते एक समान वितरण करते हैं । तराशने की बात करें तो ध्यान आता है कि एक बार मेरा एक मित्र जिस समय घर पर आया मैं ध्यान के अभ्यास में लीन था । कुछ देर बाद जब मेरी आँखें खुली तो मेरा मित्र काफी नाराज नजर आये और चिन्तित होने की मुद्रा में कहने लगे कि ध्यान में काफी खतरा है और हाल ही में किसी व्यक्ति जो इसी तरह ध्यान के दौरान देहान्त हो गया शायद वों मुझे किसी बीमारी में देखने आये थे । मेरे मुँह से अनायास ही जवाब निकला कि उस व्यक्ति से भाग्यशाली और कौन होगा जिसे अपने अभ्यास का फल इसी जन्म में प्राप्त हो गया । पूर्ण जाग्रत अवस्था में देह त्याग किया और प्रकृति में

लीन हो गये । दर्द तो तभी तक है जब तक शरीर को भूला नहीं पाते । इसे महसूस करते हैं । इंद्रिया सक्रिय रहती हैं । एक बार दिमाग का सेल बंद किया या फिर किसी और के हवाले कुछ समय के लिए किया, बस दिल उन्मुक्त और उसके निर्णय में सबके लिए प्रेम के सिवाए कुछ भी नहीं होता । यहीं तो अभ्यास है और यही ध्यान । मानवता का ध्यान । गणित की भाषा में जीवन का हर पहलू Negative Infinity से Positive Infinity के दायरे में हल करने वाली Integral होता है, लेकिन Infinity बहुत बड़ी संख्या हो जरूरी तो नहीं विपरीत इसके इसे एक ही जीवन या उसके कुछ पल में बांध के रखे तो मुक्ति कैसे मिलेगी । Mathemetical Modelling की भाषा में कहें तो एक बार Transsient State से कोई हल Steady State की तरफ पहुचें तो फिर समय की सीमा का कोई औचित्य नहीं रहता । क्योंकि समय के साथ बदलाव को सूत्र में बांधने की आवश्यकता नहीं रहती । बहुत बड़ा अंक और Zero दोनों सीमायें एक सी लगने लगती है । शायद इसलिए मुझे Aquiter Modelling बहुत अच्छा लगता है और हाल ही में किसी मीटिंग में जब मैंने उसे शरीर में जान फूंकने की संज्ञा दी तो लोग मुग्ध हो गये । हालाकि मैं तो यही मानता हूँ कि मैं तो सिर्फ माध्यम था ।

लेकिन यह सब कुछ इतना आसान भी नहीं । समुद्र मंथन से ऊपर आये जहर को हमें ही पीना पड़ेगा । जैसा भगवान शिव ने किया था । हम अगर जहर के घूंट पीने से घबराते है तो मंथन से दूर रहे । कोई भी आपके लिए जहर पीने का काम नहीं करेगा । अध्यात्मिकता की राह में सबसे बड़ा दर्द है अपनों से बिछड़ने का । शायद मृत्यु के बाद दिवंगत आत्मा का शरीर से निकल जाने के कारण, उस आत्मा को इस दर्द का एहसास नहीं होता । हम परेशान है कि अपने कहे जाने वाले व्यक्ति हमें समझ नहीं रहे हैं । पता नहीं क्या समझा है । सोचते हैं जीवन में एक समय था कि हम समझते नहीं थे लेकिन किये जा रहे थे और लोग वाह-वाह कर रहे थे । आज सब कुछ जानते हैं कुछ नहीं कर रहे है और लोग गाली दे रहे हैं । हमारे हाथ बंधे से लगते हैं । दिल में मानव प्रेम सभी के लिये सोच है । कैसे विनाश करे उस सृष्टि का जिसके हम रचयिता भी नहीं हैं । बस यही है आध्यात्मिक अभ्यास की उन्नति के लक्षण । दिमाग के लुप्त होते ही मन में एक अजीब प्रसन्नता । बस यही तो चाहिए था । त्याग ही तो जीवन है । अपने के हँसने में क्या मजा, दूसरा प्रसन्न है और उसकी भावों की भीनी-भीनी खुशबु हम तक पहुँचे और हमें भी प्रसन्नचित्त् कर दें । क्या खूब ! अब एक ही साथ में इसे देख भी सकता हूँ और महसूस भी कर रहा हूँ । क्या अपने आपमें समा लेने से यह हो सकता था ? शायद नहीं ! मुश्किल यह है कि अध्यात्मिक भाव किसी में जोर जबरदस्ती द्वारा जगाई नहीं जा सकती । वैसे ही प्रेम यह एक पूजा है जो डर या अपनी गलतियों को छुपाने के लिए नहीं की जाती । यह तो मानव कल्याण के लिए की जाती है । इसकी शुरूआत

कब और कैसे होगी ? कोई नहीं जानता । जिस दिन कोई जान पायेगा यहीं आध्यात्मिकता, विज्ञान का रूप धारण कर लेगी ।

मेरे एक सहयोगी ने जब नई नई नौकरी शुरू की तो उसकी उम्र मात्र 22-23 साल की रही होगी । जिस आफिस में वो कार्य करता था, उसमें उसकी करीब करीब हम उम्र की एक लड़की भी कार्य करती थी । वो लड़की हमेशा आफिस समय समाप्त होने के पहले ही निकलती और फिर किसी और आफिस में शाम देर तक पार्ट टाइम नौकरी करती । मेरा मित्र उस लड़की के आफिस से जाने के बाद उसके बारे में तरह तरह की बाते सुनता और एक दिन उसे पता चला कि उस लड़की का पार्ट टाइम आफिस में अपने बॉस के साथ अनैतिक संबंध है, जबकि दोनों के उम्र में काफी फासले थे । और वो व्यक्ति दो नाबालिग बच्चों का बाप भी था । स्थिति से अनभिज्ञ मेरे मित्र को घटना में रूचि लगी और समय मिलते ही वो उस लड़की का पीछा करने लगा । मित्र उस लड़की के घरवालों के भी काफी नजदीक आने में सफल हो गया । यहां आकर उसे पता चला कि उस लड़की का बॉस भी इस परिवार के काफी करीब है और एक तरह से उसके उस गरीब परिवार पर काफी एहसान हैं । मेरे मित्र को लगा कि इस लड़की का तो शोषण हो रहा है और वो और भी ज्यादा उसके मामलों में रूचि लेने लगा । होते-होते बात हमारे तक पहुँच गई क्योंकि हर रोज शाम की बैठक में हमें उसी एक तरफा प्रेमिका के किस्से सुनने पड़ते । थोड़े दिनों के बाद मित्र ने अपने प्रेमिका से प्रेम का इजहार किया और उसके सामने शादी का प्रस्ताव भी रखा । कन्या दूसरी कौम की थी, सो उसी बहाने मजबूरी बताइ और बात को टाल गई । परन्तु समय आने पर इस बात पर विचार के लिये मान गई । इस तरह मित्र की उस लड़की से मित्रता चलती रही । हमारा मित्र बहुत खुश था और शाम होते ही हम उसे व्यस्त पाते । ऐसे ही दिन गुजरते गए ।

एक दिन किसी वार्तालाप के दौरान मेरे मित्र के आग्रह के जवाब में उस लड़की ने बताया कि वो यह काम मजबूरी में करती है । मेरे मित्र से रहा नहीं गया । पहले तो वो बॉस के घर पर जा धमका और जब दाल नहीं गली तो उसके आफिस जाकर उससे हाथापाई के लिये तैयार हो गया । वो लड़की उस वक्त ऑफिस में नहीं थी । लेकिन, शाम को घर लौटते जब उसने अपनी प्रेमिका का पीछा किया तो वो उस पर बरस पड़ी और इस रिश्ते को वहीं समाप्त करने पर बल दिया । मेरा मित्र इस दुत्कार से पीडित घर आया और कुछ खाये पीये बगैर बाहर एक कुर्सी में विचार मग्न हो गया । मुझे आज भी उस रात की बात याद है । मेरे उस मित्र के चेहरे पर दुःखों के वो छाप, दर्द की निशानी और सारी रात होठों पर सिगरेट के वो दर्दनाक 'कश' । सारी रात जागे थे हम, लेकिन वो हमसे एक वाक्य के सिवाय दूसरा वाक्य नहीं बोला " मुझसे कहां भूल हो गई" । वो उस लड़की

के व्यवहार से विचलित न था सिर्फ अपनी गलती को ढूंढ रहा था । उसे अपने कोई भी सपनों के महल टूटने का गम नहीं था । दर्द था तो बस एक एहसास का कि अब वो उस लड़की को बचा नहीं पायेगा । आज जब भी स्मृति पटल के उन पन्नों को निहारता हूँ - एक अधूरेपन के साथ सोचता हूँ । काश ! यही प्रेम मुँझे हुआ होता, ईश्वर के साथ, मानवता के प्रति । लेकिन नहीं हम तो शरीर के सिवाय आत्मा को मान्यता नहीं दे सकते । आज वो मित्र मेरे आसपास कहीं नहीं है । उसका क्या हुआ यह भी नहीं मालूम । लेकिन मुझे आश्चर्य होगा अगर उसकी आत्मा ने आध्यात्मिक उन्नति न की हो । आध्यात्मिकता की शुरूआत की शैली यही है क्योंकि प्यार तो होना ही है । इसे होने दीजिए - सिर्फ नैतिक मूल्यों को जकड़ कर रखिये । सबके प्रति आत्मिक प्रेम ही 'पूजा' है । उन्मुक्त विचारधारा इस पूजा में लगने वाले 'फूल' हैं । प्राकृतिक अनुभूति को ईश्वर का प्रसाद समझकर सेवन करना है एवं दिव्यता का अपने हृदय में सतत स्मरण करना है । सिर्फ स्थूलता पर कार्य करना ही हमारे वश में है । 'आस्था' हमारे दिल के दरवाजे तक सतत आती रहती है उसे अपने आपमें समाए रखने का मौका दें ।

******

देश को किसी संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है और वह (भारत में) केवल हिंदी ही हो सकती है ।

- श्रीमती इन्दिरा गांधी